



कृषि विज्ञान केन्द्र, शाहडोल, म.प्र.



# जवाहर कृषि संदेश

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर

अंक : 68 (जुलाई से सितम्बर 2025)

## सामयिक लेख

### वर्षा आधारित क्षेत्रों में धान की सीधी बुवाई तकनीक

धान के सामान्य खेती में खर्च में बढ़ोतरी, सिंचाई जल एवं श्रमिक की समय पर अनुपलब्धता एवं मृदा स्वास्थ्य में ह्रास की समस्या के समाधान के लिए धान की सीधी बुआई ही रोपाई का एक सफल विकल्प है। साथ ही धान की जल्दी कटाई के बाद अगली फसलों को सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। सीधी बुवाई मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं :

- **धान की सीधी-सूखी बुवाई** : सूखी भूमि में सीधी बुवाई के लिए अंतिम जुताई के बाद समतल करके सीडड्रिल अथवा जीरोटिल से बुवाई करना चाहिए।
- **धान की सीधी-गीली बुवाई** : इस विधि में खेत में पडलिंग के बाद मृदा में या मृदा की सतह पर अंकुरित बीजों की बुवाई की जाती है। जब अंकुरित बीजों को मिट्टी की सतह पर बोया जाता है तो बीज ज्यादातर वायवीय (एरोबिक) स्थितियों में होता है अतः इसे वायवीय सीधी-गीली बुवाई के रूप में जाना जाता है और जब अंकुरित बीजों को पडलिंग के बाद मिट्टी में अवायवीय (एनारोबिक) स्थितियों में बोया जाता है तो इसे अवायवीय सीधी-गीली बुवाई कहा जाता है। वायवीय और अवायवीय सीधी गीली बुवाई के तहत बीजों की बुवाई छिड़काव द्वारा या पक्तियों में की जा सकती है। पक्तियों में बुवाई के लिए ड्रम सीडर या फ़रो ओपनर व क्लोज़र वाले अवायवीय सीडर का उपयोग किया जाता है परंतु सतह पर पानी जमा नहीं रहना चाहिए अन्यथा बीज बहकर चला जाता है।

**खेत की तैयारी** : सूखी भूमि में धान की सीधी बुवाई के लिए खेत की तैयारी अन्य फसलों की तरह ही की जाती है। धान की अधिक पैदावार एवं खरपतवार नियंत्रण प्रभावी ढंग से करने के लिए गर्मी से गहरी जुताई मिट्टी भुरभुरी एवं समतल करना दोनों तरह की खेती के लिए लाभदायक होता है।

**भूमि समतलीकरण** : सीधी बुवाई वाले धान के लिए भूमि समतलीकरण एक महत्वपूर्ण बिंदु है। क्योंकि यह (1) एक समान और अच्छी फसल बढवार में मदद करता है। (2) सटीक और समान जल प्रबंधन और अच्छी जल निकासी की सुविधा प्रदान करता है। (3) सिंचाई जल की आवश्यक मात्रा को कम करता है। (4) खेत में मेड़ों की संख्या कम करके, कुल बुवाई क्षेत्र को बढ़ाता है। (5) विभिन्न आदानों (पानी, पोषक तत्व और कृषि रसायन) की उपयोग दक्षता में सुधार करता है। और (6) फसल उत्पादकता बढ़ाता है।

**उपयुक्त किस्में** : धान के कटाई के बाद गेहूँ की समय से बुआई एवं सिंचाई की बचत के लिए कम समय में पकने वाली या संकर धान का प्रयोग करना चाहिए। यद्यपि लम्बी अवधि वाली प्रजातियों का फायदा है जहां जल निकास की उचित व्यवस्था हो, जिससे कि कटाई जल्दी हो जाय।

- **लम्बी अवधि वाले किस्में** - सांभा महसूरी, उन्नत चिन्नोर, उन्नत जीराशंकर, काली कम्बोड, स्वर्णासब-1
- **मध्य अवधि वाले किस्में** - जे. आर.-81, जे. आर.-206, जे. आर.-767, जे. आर. बी.-1, एम.टी.यू.-1010
- **अल्प अवधि वाले किस्में** - धंतेस्वरी, सहभागी, इंदिरा बरानी-1

**बुवाई का समय** : वर्षा आधारित क्षेत्रों में धान की सीधी बुवाई की सफलता खेत की अच्छी तैयारी, समय से बुवाई तथा उचित किस्म के चुनाव पर निर्भर करता है। सूखी भूमि में सीधी बुवाई करने का उचित समय जून के द्वितीय सप्ताह से लेकर जून के अंतिम सप्ताह तक होता है। मानसून के देरी से आने की स्थिति में मानसून के 10-15 दिन पहले बुवाई करने से मानसून के पानी का समूचित उपयोग किया जा सकता है। मध्यम एवं निचली पानी का स्थलाकृति वाली जमीन में रोपनी के लिए पौध तैयार होने के बावजूद मानसून देरी से आने की स्थिति में किसान रोपाई करने में असमर्थ रहते हैं। ऐसी स्थिति में सीधी बुवाई (गीली) एक अच्छा विकल्प होता है। कीचड़ करके कम अवधि की किस्मों को जुलाई के द्वितीय सप्ताह से शुरू करके अगस्त के मध्य तक लगातार अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

**फसल चक्र** : धान की फसल की कटाई के बाद अलसी, चना, तोरिया, बरसीम, जई, मटर, मसूर आदि फसलें सफलतापूर्वक उगाई जा सकती है।

**बीज दर एवं बुआई का तरीका** : सूखी भूमि में सीधे बुवाई के लिए 40-45 कि.ग्रा./हे. बीज की मात्रा, देशी हल, सीड ड्रिल अथवा जीरोटिल मशीन से पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 से. मी. एवं 3 से.मी. गहराई में बुवाई करनी चाहिए। गीली मिट्टी में बुवाई के लिए 30-40 कि.ग्रा. बीज को 24 घंटे तक पानी में भिगोकर रखे एवं अंकुरित बीज को ड्रम सीडर से बुवाई करें। बीज जनित बीमारियों से बचाव के लिए 1 कि.ग्रा. बीज को कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम मात्रा से उपचारित करें।

**खाद एवं उर्वरक** : मृदा परीक्षण की सिफारिश के अनुसार रासायनिक उर्वरकों का उपयोग करना चाहिए। भूमि की अंतिम जुताई पर जैविक खाद जैसे कि एफ.एम.वाय., कंचुआ खाद या हरी पत्ती खाद आदि का 5-10 टन/हे. की दर से उपयोग करना चाहिए। सूखी भूमि में धान की सीधीबुवाई में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटाश क्रमशः 60-80:30:20 कि.ग्रा./हे. एवं गीली मिट्टी में बोये गए धान के लिए 80-100:40:30 कि.ग्रा./हे. की दर से डालनी चाहिए। फॉस्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा और नाइट्रोजन की आधी मात्रा बुवाई के समय तथा आधी बची नाइट्रोजन का 25% मात्रा बुवाई के 45 दिन बाद शीर्ष ड्रेसिंग एवं बची 25% मात्रा को 50% फूल आने पर डालनी चाहिए। भूमि में लोहे या जिंक तत्व की कमी होने पर फेरस सल्फेट या जिंक सल्फेट का 0.5% का घोल बनाकर 2 से 4 बार पत्तियों पर छिड़काव करना चाहिए।

**खरपतवार नियंत्रण** : सीधे बोये गये धान में, खासकर सूखी जमीन में खरपतवार से निजात पाने के लिए धान के साथ किसी अन्य फसल जैसे मूंग, उड़द, लोबिया तथा ढेंचा आदि को उगा लें और 25 से 30 दिन बाद में 2,4-डी के ईस्टर का प्रयोग कर, खेत में ही नष्ट कर दें। सैजेज और चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार अधिक मात्रा में होने पर एत्मिक्स के 4 ग्रा. सक्रिय अवयव अथवा क्लोरिमुरान+मेटस्फुरान की 15 ग्रा. मात्रा का प्रति हे. की दर से उपयोग करना उचित या 25 से 30 दिन बाद हाथ से निकालकर प्रभावी खरपतवार नियंत्रण करने से 2,4-डी की 500 ग्रा. मात्रा का चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार और फेनोक्साप्रोप की 50 ग्रा. मात्रा का घास की रोकथाम के लिए प्रति हे. की दर से बुआई के 20 दिन बाद प्रयोग प्रभावी पाया गया है।

**फसल सुरक्षा** : रोग प्रतिरोधी किस्मों का ही प्रयोग अधिक से अधिक किया जाना चाहिए। गर्मी के दिनों में जुताई करने से भी कीटों का प्रकोप कम होता है। कीट एवं व्याधियों के प्रकोप को खाद एवं उर्वरकों की उचित मात्रा में प्रयोग करने से काफी हद तक कम करने में मदद मिलती है। जैविक एजेंट जैसे कि ट्राइकोडर्मा डिजिननम 4.0 ग्रा. प्रति हे. तथा वीरेंस 8 ग्रा. प्रति हे. मात्रा का नेमेटोड के प्रकोप के एक सप्ताह बाद प्रयोग करने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

**कीट नियंत्रण** : धान की सीधी बुवाई सूखी विधि से करने पर उसमें दीमक, पीला तना छेदक तथा गंधी का प्रकोप होता है, जबकि सीधी बुवाई गीली विधि से करने पर दीमक का आक्रमण नहीं होता है, लेकिन बांका फीट का प्रकोप हो सकता है। इनके नियंत्रण के लिए दिए निर्देशों का पालन करने से फसल में होने वाले नुकसान को प्रभावी ढंग से कम किया जा सकता है।

- **दीमक** : इसकी रोकथाम करने के लिए 100 कि.ग्रा. बीज में 3.75 लीटर क्लोरोपाइरीफॉस मिलाकर बुवाई करनी चाहिए।
- **पीला तना छेदक** : इस कीट का प्रकोप होने पर बाली और तने की बीच का भाग सूखकर सफेद हो जाता है तथा खींचने पर आसानी से वह भाग निकलकर बाहर आ जाता है। इसकी रोकथाम के लिए फिप्रोनिल 0.3 जी. दानेदार दवा की 25 कि.ग्रा. मात्रा या कारटाप 4 जी. की 25 कि.ग्रा. मात्रा को बुआई के 30 दिन बाद खेत में डालें। इसके अतिरिक्त आवश्यकता पड़ने पर क्वीनालफॉस 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा प्रति हैक्टर अथवा क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 1.2 लीटर प्रति हैक्टर एक सप्ताह के अंतर पर दो बार छिड़काव करें।
- **बांका कीट (केसवार्म)** : इस कीट की पहचान गोलाकार ट्यूब के आकार की पत्तियों को पानी में तैरते देखकर की जा सकती है। इसकी रोकथाम करने के लिए संभव होने पर खेत से पानी को बाहर निकाल देना चाहिए तथा क्लोरोपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 1.2 लीटर या फिप्रोनिल 1.0 लीटर मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- **गंधी कीट** : दुग्धावस्था में बालियों के दाने आधे भूरे नजर आने, दानों पर छोटे-छोटे धब्बे होने अथवा खखरी अधिक होने पर समझना चाहिए कि गंधी का प्रकोप शुरू हो चुका है। इसकी रोकथाम के लिए मेथाइल पैराथियान 5 प्रतिशत या क्लोरोपाइरीफॉस 5 प्रतिशत की 25 कि.ग्रा. मात्रा का प्रति हैक्टर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

**कटाई एवं भंडारण** : फसल में फूल (कम से कम 50%) आने 30-35 दिन बाद इसकी कटाई करके खेत में सूखने दें और दाना निकाल लें। धान को खेत में झड़ने से रोकने के लिए उचित समय पर ही जब दाने में नमी की मात्रा 20% से ज्यादा नहीं हो तो कटाई कर लें। दाने में 12-14% नमी आने पर इसका भंडारण कर लें।

**उपज** : वैज्ञानिक विधि से खेती करने पर सूखी मिट्टी में सीधे लगाई गई धान की फसल से 30 से 45 कि.ग्रा. तथा गीली मिट्टी में 50 से 65 कि.ग्रा. उपज प्रति हे. आसानी से प्राप्त की जा सकती है। धान की उपज मिट्टी की संरचना, जलधारण क्षमता और उसमें पोषक तत्वों की उपलब्धता अनुसार सही किस्मों के चुनाव पर निर्भर करेगी। साथ ही उत्पादकता इस पर भी निर्भर करेगी कि क्या बुआई से लेकर कटाई तक सभी प्रक्रियाएं उचित समय पर पूरी की गयी।

“अरहर की भरपूर पैदावार का मूल मंत्र - धारवाड़ पद्धति का अपनाओ तंत्र”

**सोयाबीन की फसल में अनुशासित खरपतवारनाशक**

क्र.	प्रकार	रासायनिक नाम	मात्रा/हेक्टेयर
1	बौवनी पूर्व उपयोग	पेण्डीमिथालीन + इमेजेथापायर	2.5-3.0 ली.
2	बौवनी के तुरन्त बाद	डायक्लोसुलम 84 डब्ल्यू.डी.जी.	26-30 ग्राम
		सल्फेन्द्राझोन 50 ई.सी.	0.75 ली.
		पेण्डीमिथालीन 30 ई.सी.	2.50-3.30 ली.
		पेण्डीमिथालीन 38.7 सी.एस.	1.50-1.75 कि.ग्रा.
		फ्लूमिआक्साझिन 50 एस.सी.	0.25 ली.
		मेट्रीब्युझिन 70 डब्ल्यू.पी.	0.75-1.00 कि.ग्रा.
		सल्फेन्द्राझोन + क्लोमोझोन	1.25 ली.
		पायरोक्सासल्फोन 85 डब्ल्यू.जी.	150 ग्रा.
		मेटालोक्लोर 50 ई.सी.	2.00 ली.
3.	अ. बौवनी के 10-12 दिन बाद	क्लोरीम्यूरान इथाईल 25 डब्ल्यू.पी.+ सर्फक्टेन्ट बेन्टाझोन 48 एस.एल.	36 ग्राम 2.00 ली.
	ब. बौवनी के 15-20 दिन बाद (POE)	इमेजेथापायर 10 एस.एल. + सर्फक्टेन्ट इमेजेथापायर 70% डब्ल्यू.जी. + सर्फक्टेन्ट क्विजालोफाफ इथाईल 5 ई.सी. क्विजालोफाफ-पी-इथाईल 10 ई.सी. फेनाक्सीफाफ-पी-इथाईल 9.3 ई.सी. क्विजालोफाफ-पी-टेफ्युरिल 4.41 ई.सी. फ्लचयूआजीफॉफ-पी-ब्युटाईल 13.4 ई.सी. हेलाक्सिफॉफ आर मिथाईल 10.5 ई.सी. प्रोपाक्विजाफॉफ 10 ई.सी. क्लेथोडियम 25 ई.सी. फ्लूथियासेट मिथाईल 10.3 ई.सी.	100 मि.ली. 100 ग्रा. 0.75-1.00 ली. 375-450 मि.ली. 1.11 ली. 0.75-1.00 ली. 1.00-2.00 ली. 1.0-1.25 ली. 0.50-0.75 ली. 125 मि.ली.
	स. पूर्वमिश्रित खरपतवारनाशक	फ्लूआजिआफॉफ-पी-ब्युटाईल + फोमेसाफेन इमोजेथायर + इमेजामॉक्स प्रोपाक्विजाफॉफ + इमाजेथापायर सोडियम एसीफलासेरफेन + क्लोडिनाफाफ प्रोप्रार्गील फोमेसाफेन + क्विजालोफाफ इथाईल क्विजालोफाफ इथाईल + क्लोरीम्यूरान इथाईल+ सर्फक्टेन्ट	1.00 ली. 100 ग्रा. 2.00 ली. 1.00 ली. 1.50 ली. 375 मिली+36 ग्रा.

**सोयाबीन की उन्नत किस्म**

**सामयिक लेखा**

क्र.	किस्म/प्रजाति	विमोचन वर्ष	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उत्पादन (किं./हे0)
1	एन.आर.सी.-157 (म.प्र.)	2023	93	16
2	इंदौर सोया-131	2023	92	15
3	इंदौर सोया-136	2023	105	16
4	एन.आर.सी. 152	2023	89	18
5	एन.आर.सी. 150	2023	91	18
6	जे.एस. 21-72	2023	97	21
7	आर.वी.एस.एम. 2011-35	2021	98	22
8	एनआरसी 138 (इंदौर सोया-138)	2021	93	18
9	एन.आर.सी.-142 (इंदौर सोया 142)	2021	97	20
10	एन.आर.सी.-130 (इंदौर सोया 130)	2021	92	15
11	आर.एस.सी. 10-46	2021	102	19
12	आर.एस.सी. 10-52	2021	101	21
13	जे.एस. 20-116	2019	101	21
14	जे.एस. 20-94	2019	97	21
15	जे.एस. 20-98	2018	96-101	21
16	साज सोया 18 (आर.वी.एस.-18 (म.प्र.)	2017	92	19
17	राज सोया 24 (आर.वी.एस. 2002-4)	2017	99	19
18	जे.एस. 20-69 (म.प्र.)	2016	93-95	19

**धान में खरपतवार नियंत्रण हेतु विभिन्न खरपतवारनाशी**

खरपतवारनाशी	सक्रिय तत्व	मात्रा/हेक्टर	प्रयोग का समय	खरपतवारों पर नियंत्रण
पायराजोसल्फ्यूरिन ईथाइल (10 प्रतिशत)	20 ग्राम	200 ग्राम	रोपाई/बुआई के 3 दिनों के अन्दर	मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
बिसपायरीबैक सोडियम (10 प्रतिशत) (नोमिनी गोल्ड)	25 ग्राम	250 मि.ली.	रोपाई/बुआई के 17-20 दिनों बाद	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
एनीलोफॉस (एनीलोगार्ड)	400-500 ग्राम	-	बुआई/रोपाई के 3-4 दिनों बाद	घास एवं मोथाकुल के खरपतवार
प्रेटिलाक्लोर (37 प्रतिशत)	555 ग्राम	1500 मि.ली.	बुआई के 3 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
बेन्सल्फ्यूरिन मिथाइल (0.6 प्रतिशत)+ प्रेटिलाक्लोर (6 प्रतिशत)	6+600 ग्राम	10 कि.ग्रा.	रोपाई के 8 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
पेण्डीमिथालीन (30 प्रतिशत)	750-1000 ग्राम	2.5-3.3 ली.	बुआई के 3 दिनों के अन्दर	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती
पिनाकुसुलम (1.02 प्रतिशत)+ साइहैलोफॉफ ब्यूटाईल ( 5.1 प्रतिशत)	135 ग्राम	2250 मि.ली.	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल, मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
फेनाक्जाप्रॉफ (5 प्रतिशत)+ इथाक्सी सल्फ्यूरिन (15 प्रतिशत)	60+20 ग्राम	667 मि.ली.+ 135 ग्राम	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल, चौड़ी पत्ती एवं मोथाकुल
फेनाक्जाप्रॉफ पी-ईथाइल (9 प्रतिशत)	60 ग्राम	667 मि.ली.	बुआई के 25 दिनों बाद	घासकुल
मेटसल्फ्यूरिन मिथाइल (10 प्रतिशत)+ क्लोरीम्यूरिन ईथाइल (10 प्रतिशत)	4 ग्राम	20 ग्राम	बुआई के 25 दिनों बाद	मोथाकुल एवं चौड़ी पत्ती
इथाक्सी सल्फ्यूरिन (15 प्रतिशत)	20 ग्राम	135 ग्राम	बुआई के 20 दिनों बाद	घासकुल एवं चौड़ी पत्ती

फसल	खरपतवारनाशी रासायन	मात्रा सक्रिय तत्व (ग्राम/हे.)	व्यापारिक मात्रा(ग्राम/हे.)	छिड़काव का समय	खरपतवारों का नियंत्रण
<b>तिल</b>	पेण्डीमिथालीन 30 ई.सी.	750-1000	2500-3000	बुआई के 0-3 दिनों तक	घासकुल एवं चौड़ीपत्ती वाले खरपतवार
	क्विजालोफाफ इथाईल 5 ई.सी.	40-50	800-1000	बोआई के 15-20 दिन के भीतर	घासकुल वाले खरपतवार
<b>मूंगफली</b>	पेण्डीमिथालीन 30 ई.सी.	750-1000	2500-3000	बुआई के 0-3 दिनों तक	घासकुल एवं चौड़ीपत्ती वाले खरपतवार
	क्विजालोफाफ इथाईल 5 ई.सी.	40-50	800-1000	बोआई के 15-20 दिन के भीतर	घासकुल वाले खरपतवार
	इमेजेथापायर 10 एस.एल.	100	1000	बोआई के 15-20 दिन के भीतर	घासकुल एवं चौड़ी पत्तीवाले खरपतवार
<b>मूंग, उड़द एवं अरहर</b>	एलाक्लोर 50 डब्ल्यू.पी.	1500-2000	3000-4000	बोनी के 0-3 दिनों तक	घासकुल व कुछ चौड़ी पत्तीवाले
	पेण्डीमिथालीन 30 ई.सी.	750-1000	2500-3000	बोनी के 0-3 दिनों तक	घासकुल एवं चौड़ी पत्तीवाले खरपतवार
	ओक्साडाईजोन 25 ई.सी.	250	1000	बोनी के 0-3 दिनों तक	विविध प्रकार के खरपतवार
	ऑक्सीफ्लोरफेन 23.5 ई.सी.	100-125	400-500	बोनी के 0-3 दिनों तक	विविध प्रकार के खरपतवार
	इमेजेथापायर 10 एस.एल.	100	1000	बोनी के 15-20 दिन के भीतर	घासकुल एवं चौड़ी पत्तीवाले खरपतवार
	क्विजालोफाफ इथाईल 5 ई.सी.	40-50	800-1000	बोनी के 15-20 दिन के भीतर	घासकुल वाले खरपतवार

## केन्द्र द्वारा सम्पादित गतिविधियाँ (अप्रैल 2025 से जून 2025)

### कृषक प्रक्षेत्र परीक्षण

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1	कुटकी-सरसों/चना फसल प्रणाली में कुटकी की उन्नत किस्में JK-4 व CG-1 का आंकलन	0.4	05
2	धान की सीधी बुवाई में अंकुरण पूर्व एवं पश्चात् खरपतवारनाशकों का आंकलन	0.4	05
3	छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए मृगीपालन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली का आंकलन	0.4	05
4	चना-धान प्रणाली में बीजीए के साथ नवीन धान (JR22, JR21, CR Dhan 310) का आंकलन	0.4	05
5	वॉक बिहाइंड स्व-चलित चार पंक्ति धान ट्रांसप्लांटर का आंकलन	0.4	05
6	चटाईनुमा नर्सरी तैयार करने हेतु मैनुअल धान नर्सरी बीज रोपण यंत्र का आंकलन	0.4	05
7	सोयाबीन की बुवाई हेतु ब्रॉडबेड फरो सीडड्रिल का आंकलन	0.4	10
8	खेत की मेढ़ पर सागौन के साथ धान फसल आधारित कृषि वानिकी मॉडल का आंकलन	0.4	05
9	मक्का फसल के साथ कृषक खेती की मेढ़ पर बांस (डेंड्रोकेलमसबाल्कोआ) का आंकलन	0.4	05
10	कोदो, मूंग व चावल आधारित कुपोषित शिशुओं हेतु ए.आर.एफ. युक्त शिशु आहार का आंकलन	-	10
11	40 वर्ष से अधिक उम्र की महिला किसानों हेतु कैल्शियम युक्त पोष्टिक खिचड़ी का आंकलन	-	10

### अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लाभार्थी (संख्या)
1	कोदो-सरसों फसल अनुक्रम में कोदो की उन्नत किस्म JK-137 का प्रदर्शन	02	05
2	चना-धान फसल अनुक्रम में धान की उन्नत किस्म (जीरा शंकर) का प्रदर्शन	02	05
3	फिंगर मिलेट-तिलहन फसल अनुक्रम में VL मंडुआ-376 का प्रदर्शन	02	05
4	राइडिंग टाइप धान ट्रांसप्लांटर का प्रदर्शन	02	05
5	सोयाबीन की रिज-फरो एवं रिज-बेड विधि से बुवाई का प्रदर्शन	02	05
6	कृषि-वानिकी प्रणाली में धान JR-206 का मेढ़ पर आवला के साथ प्रदर्शन	0.4	05
7	कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत यूकेलिप्टस टेरिटोकॉर्निस (क्लोन पौधों) का प्रदर्शन	0.4	05
8	पोषण वाटिका (न्यूट्रिशनल किचन गार्डन) का प्रदर्शन	01	12
9	बायो-फोर्टिफाइड धान किस्म CR Dhan-310 का प्रदर्शन	01	05

### प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	कार्यक्रम संख्या	दिवस	लाभार्थी संख्या
1	कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण	26	26	628
2	कौशल विकास प्रशिक्षण	06	51	216
3	कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी प्रशिक्षण	01	01	33
4	प्रायोजित प्रशिक्षण	04	04	393

### अन्य विस्तार गतिविधियाँ

- दिनांक 16.04.2025 को पंडित शम्भूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय, शहडोल के वनस्पति विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों को केन्द्र में 'मृदा परीक्षण' विषय पर तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें उन्हें बताया गया कि मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर मृदा का पी.एच. मान ई.सी. कार्बनिक पदार्थ, नत्रजन, फास्फोरस, पोटाश, सल्फर, जिंक, लोहा, कॉपर, मैगनीज, बोरान अंकित कर कृषकों को उपलब्ध कराया जाता है, जिससे वे फसलानुसार, क्षेत्रानुसार संतुलित उर्वरकों का प्रयोग कर अच्छा उत्पादन प्राप्त कर सकते हैं।
- दिनांक 21-22.04.2025 को केन्द्र में आयुष विभाग जिला शहडोल द्वारा देवारण्य योजना अंतर्गत एक जिला एक औषधि उत्पाद (मुनगा) की उत्पादन, भण्डारण, प्रसंस्करण, विपणन आदि विषयों पर दो दिवसीय मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। जिसमें कृषि, उद्यानिकी, वन विभाग के जिला स्तरीय अधिकारी एवं आयुष चिकित्सा अधिकारियों के साथ एन.जी.ओ., एफ.पी.ओ. और प्रगतिशील कृषक उपस्थित रहे।



- दिनांक 28.04.2025 को केन्द्र, किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग एवं कृषि अभियांत्रिकी शहडोल संयुक्त तत्वावधान में ग्राम झगरहा विकासखण्ड-सोहागपुर में नरवाई एवं फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें किसानों को फसलों के अवशेषों को न जलाने के बारे में जागरूक किया गया, क्योंकि इससे पर्यावरण भी प्रदूषित होता है साथ ही मृदा के कई पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं।
- केन्द्रीय कृषि मंत्री, मान. श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा खेती-किसानी में आमूल-चूल परिवर्तन और नई क्रांति लाने के लिए 'एक राष्ट्र, एक कृषि, एक टीम' का मंत्र देकर विकसित कृषि संकल्प अभियान की शुरुआत पूरे देश भर में की गई। इस कृषि संकल्प अभियान रथ को कलेक्टर परिसर में कलेक्टर डॉ. केदार सिंह जी एवं जनपद पंचायत सोहागपुर अध्यक्ष श्री हीरावती कोल ने हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। इसके अंतर्गत प्रत्येक विकासखण्ड में अभियान रथ चले और तीन ग्राम पंचायतों को कवर किया गया।



- जिला शहडोल में इस अभियान के अंतर्गत 29 मई 2025 से 12 जून 2025 तक केन्द्र के समस्त वैज्ञानिकों ने जिले के प्रत्येक विकासखण्ड में प्रतिदिन तीन ग्राम पंचायत में जाकर कृषि संबंधित प्रमुख योजनाओं, कृषि से संबंधित किये जा रहे नवाचारों, परम्परागत कृषि तकनीक के साथ समन्वित कृषि प्रणाली, नवीनतम तथा आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी गांव-गांव और किसान-किसान तक पहुंचाने का कार्य किया गया। इस दौरान उन्होंने किसानों की समस्यायें सुनी और समस्या का निदान भी किया। किसानों के फीड बैक को रिकार्ड कर आगे रिसर्च के लिए भी भेजा गया।
- दिनांक 25.06.2025 को केन्द्र एवं संयुक्त संचालक, कृषि शहडोल के संयुक्त तत्वावधान में संभाग स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें कृषि अधिकारियों को कृषि की नवीन तकनीकों एवं विभाग की विभिन्न योजनाओं पर प्रशिक्षण भी दिया गया।
- दिनांक 26.06.2025 को केन्द्र द्वारा जनजातीय उपयोजना अंतर्गत ग्राम-लमरो, विकासखण्ड- सोहागपुर में अरहर उत्पादन तकनीक पर कृषक प्रशिक्षण एवं बीज वितरण का आयोजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें कृषकों को अरहर के फसल की उन्नत तकनीकी पर जानकारी प्रदान की गयी।



## आगामी माह के कृषि कार्य (जुलाई से सितम्बर 2025)

### जुलाई माह में कृषि कार्य

- वर्षा होने पर सभी खरीफ फसलों की बुवाई करें।
- बुवाई उपयुक्त प्रजातियों एवं उचित बीज दर से करें।
- बीज को थाइरम 2 ग्रा.+ कार्बेन्डाजिम 1 ग्रा. दवा प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें। बुवाई के समय आधार उर्वरकों का प्रयोग करें।
- मक्का व ज्वार के साथ मूंग या सोयाबीन की अंतरवर्तीय खेती करें।
- फलदार वृक्षों के खुदे गड्ढे की भराई कर पौध रोपण के लिये तैयार करें।
- टमाटर, बैंगन, मिर्च एवं अगेती गोभी की पौध की खेत में रोपाई कर हल्की सिंचाई करें।
- पशुओं को खुरपका-मुँहपका एवं गलघोटू आदि बीमारियों का टीका लगावें।

### अगस्त माह के कृषि कार्य

- धान, मक्का, ज्वार व अन्य अनाज वाली फसलों में नत्रजन की शेष मात्रा दें।
- सभी दलहनी फसलों की बुवाई के 30 दिन के अन्दर निंदाई- गुड़ाई पूर्ण कर लें।
- सोयाबीन में 'गर्डल वीटल' का प्रकोप यदि हो तो फसल में इन्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 333 मि.ली./हे. या क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 एस.सी. दवा का 100 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- खरीफ प्याज में निंदाई-गुड़ाई करें एवं 30-40 दिन बाद 50 कि.ग्रा. नत्रजन/हे. उपयोग करें।
- पपीता में तना सड़न की रोकथाम हेतु 'बोर्डो मिश्रण' या ताँबा युक्त फफूंद नाशक दवा का छिड़काव 10 दिन के अंतराल में करें।
- सब्जियों की फसल में कीट एवं रोग नियंत्रण हेतु पौध संरक्षण के उपाय अपनायें।
- पशुओं में गौमाता रोग का टीका लगवायें।
- पशुबाड़े में वर्षा का पानी इकट्ठा ना होने दें।

### सितम्बर माह के कृषि कार्य

- धान में तना छेदक कीट के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. 1.5 ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- सोयाबीन में गर्डल वीटल कीट के नियंत्रण हेतु इन्डोक्साकार्ब 15.8 ई.सी. 333 मि.ली./हे. की दर से छिड़काव करें।
- तिल की फसल में पत्ती व फली छेदक कीट नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 ई.सी. या क्लोरोपायरीफॉस 20 ई.सी. 1-1.5 लीटर दवा प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पकी हुई मूंग, उड़द, तिल, जल्दी पकने वाली धान व मक्का फसलों की कटाई करें।
- भूमि में नमी संरक्षण करें। आवश्यकता होने पर तोरिया, कुसुम और सितम्बर अंत तक अलसी की बोनी करें।
- सिंचित दशा में अगेती मटर व आलू की बुवाई 15 सितम्बर से शुरू करें।
- पत्ता गोभी, फूल गोभी की पौध तैयार करें।
- पशुओं में खुरपका-मुँहपका व बकरियों में चेचक का टीका लगावाएँ।

## प्रस्तावित तकनीकी कार्य योजना (खरीफ 2025)

### कृषक प्रदेश परीक्षण

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लामार्थी (संख्या)
1	कुटकी-सरसों/चना फसल प्रणाली में कुटकी की उन्नत किस्में JK-4 व CG-1 का आंकलन	0.4	05
2	धान की सीधी बुवाई में अंकुरण पूर्व एवं पश्चात् खरपतवारनाशकों का आंकलन	0.4	05
3	छोटे एवं सीमांत किसानों के लिए मुराीपालन आधारित एकीकृत कृषि प्रणाली का आंकलन	0.4	05
4	चना-धान प्रणाली में बीजीए के साथ नवीन धान (JR22, JR21, CR Dhan 310) का आंकलन	0.4	05
5	वॉक बिहाइंड स्व-चलित चार पंक्ति धान ट्रांसप्लान्टर का आंकलन	0.4	05
6	चटाईनुमा नर्सरी तैयार करने हेतु मैनुअल धान नर्सरी बीज रोपण यंत्र का आंकलन	0.4	05
7	सोयाबीन की बुवाई हेतु ब्रॉडबेड फरो सीडड्रिल का आंकलन	0.4	10
8	खेत की मेढ़ पर सागौन के साथ धान फसल आधारित कृषि वानिकी मॉडल का आंकलन	0.4	05
9	मक्का फसल के साथ कृषक खेती की मेढ़ पर बांस (डेंड्रोकैलमसबाल्कोआ) का आंकलन	0.4	05
10	कोदो, मूंग व चावल आधारित कुपोषित शिशुओं हेतु ए.आर.एफ. युक्त शिशु आहार का आंकलन	-	10
11	40 वर्ष से अधिक उम्र की महिला किसानों हेतु कैल्शियम युक्त पोष्टिक खिचड़ी का आंकलन	-	10

### अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन

क्र.	विषय	क्षेत्र (हे.)	लामार्थी (संख्या)
1	कोदो-सरसों फसल अनुक्रम में कोदो की उन्नत किस्म JK-137 का प्रदर्शन	02	05
2	चना-धान फसल अनुक्रम में धान की उन्नत किस्म (जीरा शंकर) का प्रदर्शन	02	05
3	फिंगर मिलेट-तिलहन फसल अनुक्रम में VL मंडुआ-376 का प्रदर्शन	02	05
4	राइडिंग टाइप धान ट्रांसप्लान्टर का प्रदर्शन	02	05
5	सोयाबीन की रिज-फरो एवं रिज-बेड विधि से बुवाई का प्रदर्शन	02	05
6	कृषि-वानिकी प्रणाली में धान JR-206 का मेढ़ पर आंवला के साथ प्रदर्शन	0.4	05
7	कृषि वानिकी प्रणाली के अंतर्गत यूकेलिप्टस टेरिटोरिआसिस (क्लोन पौधा) का प्रदर्शन	0.4	05
8	पोषण वाटिका (न्यूट्रिशनल किचन गार्डन) का प्रदर्शन	01	12
9	बायो-फॉर्टिफाइड धान किस्म CR Dhan-310 का प्रदर्शन	01	05

### प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.	विषय	कार्यक्रम संख्या	दिवस
1	कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण	17	17
2	कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी	2	2
3	ग्रामीण युवक युवतियां	3	3
4	प्रायोजित (कृषक एवं कृषक महिला प्रशिक्षण)	1	1
5	प्रायोजित (कृषि विस्तार अधिकारी कर्मचारी)	1	1

**संरक्षक**  
**डॉ. पी.के. मिश्रा**  
कुलपति, ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर  
प्रेरणाश्रोत


**डॉ. दिनकर प्रसाद शर्मा**      **डॉ. एस.आर.के. सिंह**      **डॉ. एस.के. त्रिपाठी**  
संचालक विस्तार सेवायें      निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान      अधिष्ठाता  
ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर      जौन VII, भा.कृ.अनु.प., जबलपुर      कृषि महाविद्यालय, रीवा

**डॉ. मृगेन्द्र सिंह**      **संपादक**  
प्रधान वैज्ञानिक सह प्रमुख      **ऋषिराज नेगी**  
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी (कम्प्यूटर)

**प्रकाशक - कृषि विज्ञान केन्द्र, कल्याणपुर, शहडोल**

**लेखन एवं संकलन**

- डॉ. (श्रीमती) अल्पना शर्मा वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) 9301111646
- डॉ. बृजकिशोर प्रजापति वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) 9012012068
- श्री दीपक चौहान वैज्ञानिक (कृषि अभियांत्रिकी) 9424023760
- श्री भागवत प्रसाद पन्डे कार्यक्रम सहायक (कृषि वानिकी) 7697024787

 कृषि विज्ञान केन्द्र शहडोल द्वारा प्रसारित कृषि संदेशों एवं अन्य लाभकारी जानकारी को मोबाइल पर एस.एम.एस./व्हाट्सअप के माध्यम से नियमित प्राप्त करने हेतु साइड में दिये गये QR कोड को गूगल लेंस/QR कोड रीडर से स्कैन करने पर आये हुए लिंक को क्लिक कर अपना नाम व मोबाइल नं. पंजीकृत कृषक पंजीयन फार्म में करायें।

**बुक-पोस्ट**

प्रति, \_\_\_\_\_

प्रेषक : \_\_\_\_\_

वरिष्ठ वैज्ञानिक सह प्रमुख  
**कृषि विज्ञान केन्द्र**  
कल्याणपुर, शहडोल (म.प्र.)  
E-mail : kvkshahdol@rediffmail.com